International Journal of Trend in Scientific Research and Development, Volume 1(1), ISSN: 2456-6470
www.ijtsrd.com

# संस्कृत नाट्य साहित्य में जैनाचार्यों का अवदान

**डॉ. मोहन मिश्र**

युनिवर्सिटी प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, ति०माँ०भा० विश्वविद्यालय, भागलपुर

संस्कृत साहित्य का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथा कमनीय अङ्ग है नाट्य। 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' कहकर विद्वानों ने इसकी रमणीयता तथा महत्ता को स्वीकृति प्रदान की है। काव्य के दो प्रमुख भेदों – श्रव्य और दृश्य – में से नाटक या रूपक दृश्यकाव्य विधा के अन्तर्गत है। इसका विकास क्रम भारतीय परम्परा में ऋग्वेद काल से ढूँढा जा सकता है। ऋग्वेद के सरमा और पणि, यम और यमी, विश्वामित्र और नदी, पुरुरवा और उर्वशी के संवादों में नाट्य साहित्य के प्राचीनतम रूप उपलब्ध होते हैं। नाटक के प्रधान तत्त्व संवाद, संगीत, नृत्य और अभिनय हैं। अधिकांश विद्वान् इन चारों तत्त्वों को वेद में उपलब्ध होने से नाटक की उत्पत्ति वैदिक सूक्तों से मानते हैं।

रामायण और महाभारत काल में आकर नाटक के कुछ स्पष्ट रूप उल्लिखित पाये जाते हैं। विराटपर्व में रंगशाला का निर्देश है। हरिवंश पुराण में रामायण की कथा पर एक नाटक के अभिनीत होने का उल्लेख है। रामायण में रंगमंच, नट, नाटक का विभिन्न स्थलों पर संकेत है। पाणिनि की अष्टाध्यायी में नटसूत्र[1] और नाट्यशास्त्र का भी उल्लेख है। पातंजल महाभाष्य में 'कंसवध' और 'बालिबन्धन' नामक दो नाटकों का स्पष्ट नाम है। इस तरह वैदिक युग से विभिन्न तत्त्वों को ग्रहण करती हुई नाट्यकला का पूर्ण परिपाक अनेक शताब्दियों में हो पाया। समय–समय पर अनेक नाट्य भी रचे जाते रहे जिनके अब नाम मात्र ही अन्य ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। सर्वप्रथम नाट्यकार के रूप में महामना भास ही स्वीकृत हैं। किन्तु भास की नाट्यकला का सौष्ठव एवं परिष्कार ही इस तथ्य का द्योतक है कि उनसे पूर्व भी नाटक रचे अवश्य गये थे जो कालक्रम में लुप्त हो गये।

नाट्यसाहित्य को समृद्ध करने में जैनाचार्यों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। मध्ययुग के उत्तरकाल में जैनकवि दृश्य काव्य के क्षेत्र में आगे बढ़े।

जैनाचार्यों में सर्वप्रथम रामचन्द्र सूरि का नाम लिया जा सकता है। ये हेमचन्द्राचार्य के शिष्यों में प्रमुख थे।[2] इनका जन्म वि०सं० 1145 में हुआ था। सं० 1166 में इन्हें सूरि पद प्राप्त हुआ। इनकी संस्कृत नाट्यकृतियाँ अधोलिखित हैं –

सत्यहरिश्चन्द्र – रामचन्द्र सूरि ने सत्यहरिश्चन्द्र[3] को अपना आदिरूपक स्वीकार किया है। इसकी कथावस्तु सत्यवादी हरिश्चन्द्र से सम्बद्ध है। इस नाटक का उपजीव्य महाभारत है किन्तु अभिनय के अनुकूल आवश्यक परिवर्त्तन किये गये हैं। यह नाटक छः अंकों में पल्लवित है। भागलपुर विश्वविद्यालय में इसपर शोधकार्य भी सम्पन्न हुआ है।[4]

नलविलास – इस नाटक की कथावस्तु का भी उत्स महाभारत है जिसमें नाटककार ने यथास्थान परिवर्त्तन किया है। नलदमयन्ती की कथा को सात अङ्कों में पल्लवित किया गया है। इस नाटक में दमयन्ती का चरित्र महाभारत की अपेक्षा अधिक उदात्त है। दमयन्ती–स्वयंवर का दृश्य अतिशय प्रभावक है और हमें रघुवंश के षष्ठ सर्ग की याद दिलाता है।

मल्लिकामकरन्द – इसकी प्रस्तावना में इसे नाटक कहा गया है लेकिन है यह प्रकरण क्योंकि इसकी कथा काल्पनिक है।[5] ऐसे तो प्रकरण में दस अङ्क रखने का विधान है जबकि इसमें मात्र छः अंक हैं। स्वयं नाटककार ने अपने नाट्यदर्पण में इसे प्रकरण ही कहा है। यह एक सामाजिक नाटक है जिसकी नायिका मल्लिका है और नायक मकरन्द। यह सुखान्त नाटक है।

कौमुदीमित्रानन्द – यह एक सामाजिक नाटक है जिसमें दस अङ्क हैं। नाट्यकार ने इसे प्रकरण घोषित किया है। इसमें कौतुकनगर वासी धनी सेठ जिनसेन के पुत्र मित्रानन्द और एक आश्रम के कुलपति की पुत्री कौमुदी की प्रेमकथा वर्णित है। यह कौमुदी नाटक के नाम से भी प्रसिद्ध है। डॉ० कीथ ने इसमें मात्र अद्भुत रस की अवस्थिति मानी है।[6] डॉ० डे के अनुसार नाटकीय कृति के रूप में इसमें कोई अधिक तत्त्व नहीं है।[7]

रघुविलास – यह आठ अङ्कों का नाटक है जिसमें राम के वनवास और सीता–मिलन की घटना जैन रामायण के अनुसार वर्णित है। इस नाटक का संक्षिप्त रूप 'रघुविलासनाटकोद्धार' उपलब्ध होता है जिसमें गद्य भाग को हटाकर मात्र पद्य रखे गये हैं।

निर्भयभीमव्यायोग – यह एक अङ्क का रूपक[8] है जो व्यायोग के अन्तर्गत है। इसमें महाभारत में वर्णित बकासुर के वध को कथावस्तु बनाया गया है। इसमें भीम एक ब्राह्मण युवक को राक्षस बक के चंगुल से छुड़ाता है और स्वयं अपने को बलिरूप में प्रस्तुत कर बकासुर का वध कर देता है। इसमें अरस्तू के सिद्धान्त संकलन त्रय – स्थान की एकता, समय की एकता और घटना की एकता का पूर्णरूपेण पालन हुआ है।

इसके अतिरिक्त रोहिणी मृगाङ्क, राघवाभ्युदय, यादवाभ्युदय और वनमाला भी रामचन्द्रकृत नाट्यकृतियाँ हैं जो सम्प्रति उपलब्ध नहीं हैं।

चन्द्रलेखाविजयप्रकरण – यह हेमचन्द्राचार्य के अन्यतम शिष्य देवचन्द्र की रचना है। इसमें 5 अङ्क हैं। इसकी नायिका चन्द्रलेखा एक विद्याधरी है।

प्रबुद्धरौहिणेय – यह रामभद्र की रचना है जो छः अंकों में पल्लवित है। इसमें भगवान् महावीर के समकालिक राजागृहनरेश श्रेणिक के राज्यकाल के प्रसिद्ध चोर रोहिणेय के प्रबुद्ध होने का वर्णन किया गया है।[9]

द्रौपदीस्वयंवर – यह दो अङ्कों का संस्कृत नाटक[10] है। इसके रचयिता महाकवि विजयपाल हैं। इसमें कवि ने ऐसे कई छन्दों का निर्माण किया है जिन्हें पदशः विभक्त कर अनेक पात्रों से कहलाया गया है।

मोहराजपराजय – यह पाँच अंकों में विभक्त है। इसमें गुजरात के चौलुक्य नरेश राजा कुमारपाल द्वारा आचार्य हेमचन्द्र के उपदेश से जैनधर्म स्वीकारना, प्राणिहिंसा को रोकना अदत्त मृतधनापहरण का त्याग करने आदि का चित्रण है। इसके रचयिता यशःपाल कवि हैं।

मुद्रितकुमुदचन्द्र – यह कवि यशश्चन्द्र की रचना है जिसमें पाँच अंक हैं।[11] इनका 'राजीमतीप्रबोध' नामक एक अन्य नाटक भी मिलता है।[12]

धर्माभ्युदय – इसके रचयिता एक जैन साधु मेघप्रभाचार्य हैं। यह एकांकी नाटक है।[13] इसमें राजर्षि दशार्णभद्र के जीवन का घटना–प्रसंग वर्णित है।

शमामृत – नेमिनाथ के जीवन पर आधारित एक दूसरा एकांकी छाया नाटक है जिसके रचयिता रत्नसिंह हैं।[14]

हम्मीरमदमर्दन – इसके प्रणेता जयसिंहसूरि हैं। इस नाटक[15] का संस्कृत साहित्य में अपना एक स्थान है। इसमें गुजरात के बघेलवंशी नरेश वीरधवल और उसके मन्त्री वस्तुपाल द्वारा मुसलमानों के रोकथाम का चित्रण है। इस नाटक में पाँच अंक हैं। इसका समय वि०सं० 1279 है।

करुणावज्रायुध – यह एक एकांकी नाटक है।[16] इसकी कथावस्तु में वज्रायुध चक्रवर्ती द्वारा

बाजपक्षी को अपना मांस देकर कबूतर की रक्षा करना दिखाया गया है। इसके लेखक बालचन्द्र सूरि हैं।

अंजनापवनञ्जय – यह हस्तिमल्ल की रचना है। दाक्षिणात्य जैन कवियों में संस्कृत नाटककार के रूप में कवि हस्तिमल्ल का एक विशेष स्थान है। इस नाटक में सात अंक हैं। इसमें विद्याधर राजकुमारी अंजना का स्वयंवर, राजकुमार पवनञ्जय के साथ विवाह और उनके पुत्र हनुमान के जन्म का घटना–प्रसंग वर्णित है।

सुभद्रानाटिका – कविवर हस्तिमल्ल विरचित यह नाटिका चार अङ्कों में पल्लवित है। इसमें ऋषभदेव के पुत्र भरतचक्रवर्ती के साथ कच्छराज की पुत्री और विद्याधर नमि की बहन सुभद्रा के परिणय की कथा है।

विक्रान्तकौरव – हस्तिमल्लविरचित इस नाटक में छः अंक हैं।[17] इसमें हस्तिनापुरनरेश सोमप्रभ के पुत्र कौरवेश्वर जयकुमार और काशी के राजा अकम्पन की पुत्री सुलोचना के विवाह का चित्रण किया गया है। यह सुलोचनानाटक के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसकी कथावस्तु का आधार जिनसेनकृत आदिपुराण है।

मैथिलीकल्याण – हस्तिमल्लकृत यह नाटक पाँच अंकों में पल्लवित है जिसमें सीता और राम के स्वयंवर का वर्णन है।

ज्योतिष्प्रभानाटक – इस नाटक की कथावस्तु 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ के नवम पूर्वभव के जीव अमिततेज विद्याधर और त्रिपृषु नारायण की पुत्री ज्योतिष्प्रभा का रोमांटिक चरित्र है। इसके रचयिता ब्रह्मसूरि[18] हैं जो नाट्याचार्य हस्तिमल्ल के वंशज हैं। इस नाटक की रचना भगवान् शान्तिनाथ के जन्मकल्याण के पूजा–महोत्सव के दिन खेलने के लिए की गयी थी।

रम्भामंजरी – इसके रचयिता नयचन्द्रसूरि हैं। नाट्यकार ने नट और सूत्रधार के माध्यम से इसे सट्टक कहा है। इसमें बनारस का राजा पंगु उपनमाधारी जयचन्द्र सात रानियों के रहते हुए भी अपने को चक्रवर्ती सिद्ध करते हुए लाटनरेश की पुत्री रम्भा से विवाह करता है।

ज्ञानचन्द्रोदयनाटक – यह श्रीकृष्ण मिश्र के प्रबोधचन्द्रोदय के उत्तर में लिखा हुआ नाटक लगता है। इसके रचयिता सम्राट् अकबरकालीन पद्मसुंदर हैं।

ज्ञानसूर्योदयनाटक – इसके रचयिता वादिचन्द्र हैं। यह भी श्रीकृष्ण मिश्र के प्रबोधचन्द्रोदय के उत्तर में लिखी कृति है। ज्ञानसूर्योदय के कर्त्ता ने प्रबोधचन्द्रोदय के समान ही बौद्धों का

उपहास किया है और क्षपणक के स्थान में सितपट को खड़ा कर श्वेताम्बर–वर्ग का भी।

अन्य नाटकों में आगमगच्छेश मलयचन्द्रसूरिकृत मन्मथमथननाट्य उल्लेखनीय है। इसकी रचना आचार्य स्थूलभद्र और कोशा (वेश्या) के उपाख्यान पर की गयी है।

इस तरह उपर्युक्त समीक्षा से स्पष्ट होता है कि संस्कृत नाट्यकानन को समृद्ध करने में जैनाचार्यों ने अत्यधिक सहयोग प्रदान किया। संस्कृत नाट्यसाहित्य जैनाचार्यों का सतत ऋणी रहेगा।

"शमिति"

**पादटिप्पणी –**


[1] पाणिनि, अष्टाध्यायी, 4/3/110 – पराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षुनटसूत्रयोः। 4/3/111 – कर्मन्दकृशाश्वादिभिः।

[2] भोगीलाल ज० सांडेसरा, हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमण्डल, नाट्यदर्पण : ए क्रिटिकल स्टडी। पृ० 209–222

[3] जिन रत्नकोश, पृ० 412, 460, निर्णयसागर प्रेस बम्बई, अत्रे और पुराणिक द्वारा सम्पादित, सत्य विजयजैन ग्रन्थमाला में मुनि मानविजय द्वारा सम्पादित एवं सत्य श्रीहरिश्चन्द्र नृपतिप्रबन्ध के अन्तर्गत विना अंक विभाग के प्रकाशित, अहमदाबाद, 1924, नाट्यदर्पण : ए क्रिटिकल स्टडी, पृ० 224 में संक्षिप्त परिचय।

[4] डॉ० मधु कुमारी, चण्डकौशिक और सत्यहरिश्चन्द्र का तुलनात्मक अध्ययन ख्पी–एच०डी० शोधप्रबन्ध, भागलपुर विश्वविद्यालय, 1992,

[5] नाट्यदर्पणः ए क्रिटिकल स्टडी, पृ० 230 में संक्षिप्त परिचय।

[6] ए०बी० कीथ, संस्कृत ड्रामा, पृ० 258–259, गुजराती अनुवाद भाग – 2, पृ० 376–377

[7] सुशील कुमार डे, हिस्ट्री और संस्कृत लिटरेचर, पृ० 475–476

[8] जिन रत्नकोश, पृ० 314, यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, संख्या 19, वाराणसी, वी०सं० 2437

[9] इसका परिचय 'जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' में पृ० 325 में दिया गया है।

[10] जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, 1918, सम्पादक – मुनि जिन विजयजी।

[11] यशोविजय जैन ग्रन्थमाला, सं० 8, काशी, वी०सं० – 2432

[12] जिनरत्नकोश, पृ० 331

[13] जैन आत्मानन्द सभा, सं० 61, भावनगर, वि०सं० 1975, इसका जर्मन अनुवाद जेड०डी०एम०डी०, भाग 75, पृ० 69 प्रभृति और Indische Shatten-theater में पृ० 48 में हुआ है। जिनरत्नकोश, पृ० 195य कीथ, संस्कृत ड्रामा, पृ० 55 और 269

[14] जिनरत्नकोश, पृ० 378य जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, वि०सं० – 1997 में प्रकाशित।

[15] जिनरत्नकोश, पृ० 459, गायकवाड़ प्राच्य ग्रन्थमाला, सं० – 10, बड़ौदा, 1920

[16] जिनरत्नकोश, पृ० 68, जैन आत्मानन्द सभा, संख्या 56, भावनगर, वि०सं० 1973, इसका गुजराती अनुवाद अहमदाबाद से वि०सं० 1943 में प्रकाशित।

[17] जिनरत्नकोश, पृ० 350, माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला, पुष्प 3, बम्बई, 1972

[18] प्रदोषे जायते प्रातः किं का मंगलवाचकम्। किं रूपयन्तु तच्चेह ब्रह्मसूरिकृतिश्च का॥